
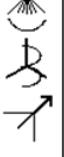


**Sri – Om**  
**VEDIC MATHEMATICS AWARENESS YEAR**

E-Newsletter Issue no 146 dated 30-03-2015

For previous issues and further more information visit at [www.vedicganita.org](http://www.vedicganita.org)

		<p>ॐ । गायत्री छन्द । सरसवती मंत्र । महेश्वर सूत्र । गणित सूत्र</p> <p>Om Gyatri Chand, Saraswati Mantra, Maheshwar Sutra, Ganita Sutras</p>
-----------------------------------------------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

<b>वैदिक गणित</b> (सूर्य रश्मियो का गणित)	<b>Vedic Mathematics</b> (Sunlight format Mathematics)
<p>I. देवनागरी वर्णमाला II. जड़ भरत III. वर्णों की उत्पत्ति IV. पंचीकरण V. ज्योति व्यूह अंक VI. आ ब्रह्म भुवन लोक VII बीज अक्षर VIII श्री ॐ IX देवनागरी लिपि X रेफ</p> <p style="text-align: center;"><b>XI</b></p> <p>एक वर्णमाला से दूसरी वर्णमाला तक</p> <p>एक वर्णमाला से दूसरी वर्णमाला तक पहुंचने के लिये एक खास आधार है।</p> <p>इस आधार को जानने से ही हम संस्कृत भाषा से अन्य भाषाओ में पहुंचने की विध्या को प्राप्त कर सकते है।</p> <p>ये विधि विधान भी वैदिक गणित के अनुशासन से प्राप्त किया जा सकता है।</p> <p>ज्योति से नाद व नाद से शब्द तथा शब्द से वर्ण व अक्षर और अर्थ, ये एक श्रंखलाबद्ध आयामवा सोपान है, जो कि व्यष्टि समष्टि के संकलन व्याकलन, आरोही अवरोही संरचना वाले है।</p>	<p>I. Devnagri alphabet II. Jad Bharat III. Creation of letters IV. 5 x 5 format V. Transcendental code value VI. Along organization format of elongated first vowel VII Seeds syllables VIII Sri Om IX Devnagrai script X Raif (letter: second Antstha)</p> <p style="text-align: center;"><b>XI</b></p> <p>From one alphabet to another alphabet</p> <p>A reach from one alphabet to another alphabet is of specific foundation format.</p> <p>By knowing this foundation format, we can reach from Sanskrit language to another language (languages) and attain this Discipline of knowledge.</p> <p>This knowledge (procedures and steps) of it as well can be attained the knowledge and values of Vedic Mathematics.</p> <p>From Jyoti to Nad (sound), from Nad (Sound) to Shabad (word) and from shabad (word) to letters, syllables and meanings thereof, are as per the sequential arrangement of dimensional orders and dimensional domain. The same are of</p>

इस सरंचना के मूल्य योग वा सांख्य अनुशासनो को एक साथ उर्ध्व गति को ले जाने वाले है। ऐसा होने के कारण से हमे इस उर्ध्व गति वाले अनुशासन मे रहकर ही एक वर्णमाला से दूसरी वर्णमाला मे पहुंच सकते है।

इस प्राप्ति के लिये सर्वप्रथम हमे देवनागरी वर्णमाला के ५० वर्णों / अक्षरों की व्यवस्था के गुणो को जानना होगा।

देवनागरी वर्णमाला के ५० वर्णों / अक्षरों की व्यवस्था के क्रम से एक एक वर्ण तक पहुंचना होगा। इस पहुंच के लिये प्रत्येक वर्ण वा स्थापत्य स्थान उसकी लिपि तथा ध्वनि को जानने की आवश्यकता होगी।

ध्वनि से प्रकाश की तरंगों के समांतर व्यवस्था अनुसार रंगों वा अंकों के समांतर व्यवस्था प्राप्त होगी।

अंकों की व्यवस्था ज्योतिर्व्यूह मूल्यों वाले अंकों की व्यवस्था है। तथा ये व्यवस्था सांख्य व योग का एकीकरण करके सभी व्यवस्थाओं का एकणर्व प्राप्त कर लेता है। इसी प्राप्ति से ही सभी वर्णमालाओं का एक एकणर्व हो जाता है। ये एक एकणर्व पृथ्वी तत्व का जलतत्व मे विलय होना है।

Vyasti (occalayized creation) and Sameshti (universal creation), as well as of simultaneous sequential increasing and decreasing progressions of maxima and minima attainment limits.

These organization features of creation format are unifying Sankhiys (numbers, values) And yoga (dimensional values vertical formats). This being so by obeying the vertical format only we can transit and reach from the format of one alphabet to the format of another alphabet.

For this, first of all we have to comprehend the organization and arrangement of the 15 letters of Devnagri alphabet.

Each letter is to be reached at in the light of individual letters placements in the complete organization format of Devnagri alphabet. For this reach need would be to know the placement value, script form and sound frequencies of individual letters.

With this the organization arrangement of parallel of sound frequencies and light frequencies, reach would be at the parallel organization features of colors spectrum format and transcendental code values format.

The basic number values are parallel to transcendental code values. As such this organization unifies Sankhiya (numbers) and Yoga (Geometric domains format) and thereby attains unified formats for all alphabets. Unificaiton of all alphabets is there because of this feature. This unification is parallel to dissolution of Earth into Water.

पुनः जल तत्व से अग्नि तत्व का उत्पन्न होना वेदनाद वा वेदज्योति का एकसाथ उत्पन्न होना है। अतः ये हृदय से नाभि तथा नाभि की नाभि का हृदयग्रन्थि के स्वरूप में प्रकट होना है। हृदयग्रन्थि चतुरानन चक्री का शिवलोक में ले जाना वाला प्रवेश द्वार है यही मथुरा से द्वारका का श्रीकृष्ण जी का गमन है। यही विष्णु जी का नाभि कमल है।

इस नाभिकमल की व्यवस्था का अनुसंधान ही सभी वर्णमालाओं का अन्वेषण है।

नाभिकमल का अन्वेषण ही वैदिक गणित विज्ञान व तकनीक का अन्वेषण है।

नाभि कमल से सृष्टिकर्ता की सृष्टि का ज्ञान विज्ञान ही वेद विद्दाओं के मूल्य है।

नाभि कमल की ज्योतिर्व्यूह मूल्यांक =  $8 + 2 + 8 + 2 + 2 + 10 + 6 = 38 = 2 + 36 = 2 + 16 + 20 = 2 + (\text{प्रणव}) = 2 + (\text{ॐ वेद})$

अतः नाभिकमल =  $2 + (\text{ॐ वेद}) = 2 + \text{प्रणव} = \text{अन्कूल} + \text{अन्कूल} = \text{कृष्णाकूल}$ ।

ये ज्ञातव्य है कि श्री कृष्ण सुदर्शन चक्र की नाभि को अपनी एक अंगुली पर धारण करते हैं।

\*

The emergence of fire from water is parallel to simultaneous emergence of Nad (sound) and Jyoti (light). This is unification of space and naptal knot, parallel to the reach at knot (cavity of heart). This heart cavity knot is the location of entrance door of creator's space (4-space) to transcendental domain (5-space). This is the reach of Lord Krishna (incarnation of Vishnu) from Mathura (4-space) to Dwarka (6-space). This is the naptal knot lotus of Lord Vishnu.

The investigation of organization of this naptal knot lotus is the investigation of the transition format features of alphabets.

The investigations of naptal knot notice are the investigations of Vedic mathematics, Science & Technology.

The knowledge and transcendental values of creation of creator himself within naptal knot lotus is the knowledge and transcendental value of Vedic knowledge.

TCV (नाभि कमल) =  $8 + 2 + 8 + 2 + 2 + 10 + 6 = 38 = 2 + 36 = 2 + 16 + 20 = 2 + \text{TCV (प्रणव)} = 2 + \text{TCV (ॐ)} + \text{TCV (ॐ वेद)}$

TCV (नाभिकमल) =  $2 + \text{TCV (ॐ वेद)} = 2 + \text{TCV (प्रणव)} = \text{TCV (अन्कूल)} + \text{TCV (अन्कूल)} = \text{TCV (कृष्णाकूल)}$ ।

It would be relevant to note that Lord Krishna established Sudershan Chakra with placement of origin ring upon one finger.

\*